संपादक की कलम से...

संपूर्ण भारत में अगर हिन्दी को स्थापित करना है, तो न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका में संपूर्ण स्थान हिन्दी को मिलना चाहिए।

समूह, समाज अथवा देश की अस्मिता की प्रतीक भाषा होती हैं। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने भी कहा है कि "राष्ट्र एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं।" अपनी भाषा के प्रति प्रेम और गौरव की भावना न हो तो की अस्मिता खतरे में पड़ सकती है। हिंदी भाषा के सरकारी प्रयोग और सामाजिक उपयोग को लेकर देश में गाहे–बगाहे चर्चा चल रहती है, पर समय सहमति में क्षेत्रीयता का चश्मा चढ़ाकर देखने की आदत के कारण देश को आज तक राष्ट्रभाषा नहीं मिली। हिं को राष्ट्रभाषा घोषित किये जाने को लेकर कभी सरकार पर यह आरोप लगता है कि वह हिंदी की उपेक्षा कर रही है, तो कभी गैर–हिं भाषियों पर अभियोग लगता है। हिन्दी भाषा सदैव ही उत्तर–दक्षिण के भेद से परे व्यावहारिक होती चली आ रही है। जनजीवन समरसता और संवाद में सहजता का प्रादुर्भाव करना हिंदी के स्वभाव में है। वैज्ञानिक, शैक्षणिक, सामाजिक और ज्ञान–विज्ञान विस्तार के साथ हिंदी का रूप उभर कर सामने आया है। इन रूपों के प्रचलन से हिंदी में नए शब्दों, अभिव्यक्तियों, नए सह–सं का आगमन हुआ है। इनके प्रयोग की दिशाएँ खुली हैं और इन्हें सामाजिक स्वीकार्यता मिली है।

भारतीय लोकजीवन में आधुनिकता के प्रवेश के साथ–साथ हिंदी का संपूर्ण आधुनिक काल भी इसी परिवेश के अंतर्गत समावि हुआ। प्रबुद्ध वर्ग की संवेदना का आधार युग का नया दृष्टिकोण कहलाया। स्वभाव से प्रगतिशील भाषाई विशेषतान्तर्गत हि सांस्कृतिक एकता एवं भाषाई समता से परिपूर्ण है। हिंदी हमेशा से एक पुल की भूमिका में दिखाई देती रही है और अपनी यात्रा निर्बाध आगे बढ़ रही है। आईये निज भाषा की प्रतिष्ठा एवं उन्नति के लिए हम सब मिलकर प्रयास करें। हिंदी की समावेशी संश्लिष्ट परंपरा को तीव्रता से प्रकट करने की आवश्यकता है।

भाषा सहोदरी हिंदी एक समर्पित संस्था है, हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। पाँचवे अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन आमंत्रित करने के लिए जब दक्षिण भारत के भाषा सहोदरी हिंदी के प्रतिनिधि मण्डल कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री वजुभा वाला से मिले, तब उन्होंने बड़ी ही आत्मीयता से आश्वासन दिया कि "हिंदी के क्षेत्र में राष्ट्रभाषा बनाने के लिए संकल्परत लो के साथ हूँ। यह मेरे लिए भी सम्मान की बात होगी"।

भाषा सहोदरी हिंदी का छठवां अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन 24 एवं 25 अक्तूबर 2018 को हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्याल नई दिल्ली में आयोजित हुआ था और दिल्ली में आयोजित सभी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी अधिवेशनों में कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदे तेलंगाना, केरल, आसाम, महाराष्ट्र, गोवा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, पश्चिम बंगाल, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, मेघाल जम्मू आदि अहिंदी राज्यों एवं देश के अलावा विदेशों से भी मलेशिया, ओमान, नेपाल, फिजी, मॉरिशस, सिंगापुर आदि देशों शिक्षाविद्, साहित्यकार, लेखक, रचनाकार इस अभियान से जुड़े हैं, जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की दिशा में अपने विच इस पत्रिका में व्यक्त किये हैं। मैं उन सभी सम्माननीय मित्रों को शुभकामनाएँ देना चाहती हूँ।

भाषा सहोदरी हिंदी (न्यास) भारत का एक ऐसा संगठन है जो भारत में भारतीय भाषाओं के साथ–साथ हिंदी को सम्पू रूप से भारत में स्थापित करने के लिए अभियान चला रही है। मंथन संवाद के माध्यम से भारत के 1847 कॉलेजों, विश्वविद्याल तक इस अभियान को चलाया गया और देश के छात्र–छात्राओं से सीधा संवाद स्थापित किया गया। इस न्यास से देश भर शिक्षक, प्रोफेसर, हिंदी के लेखक, शोधार्थी, साहित्यकार, पत्रकार, न्यायधीश, कुलपति, अधिवक्ता, राजनेता, भारत सरकार के मं सांसद, राज्यपाल, सामाजिक कार्यकर्ता, भारत के बुद्धिजीवी वर्ग का सहयोग मिला है। आपको बताते हुए हर्ष की अनुभूति हो र है कि भाषा सहोदरी हिंदी प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी अपना सातवाँ अंतर्राष्ट्रीय हिंदी अधिवेशन नई दिल्ली में करने जा र है।

विषय–सूची

1. स्त्री और परिवार विमर्श : ममता कालिया के उपन्यासों के संदर्भ में	डॉ० जीनू मेरी मैथ्यूज	12
2. शिक्षा में भाषा का महत्व	नूतन गर्ग	13
3. दलित विमर्श की अवधारणा	विभा वर्मा	14
4. विश्व में हिन्दी का महत्व	डॉ० अशोक पण्ड्या	15
5. हिन्दी साहित्य में नारी : उपन्यास के सन्दर्भ	डॉ० रेखा सिंह	16
6. क्षेत्रीय भाषा की चर्चित पुस्तक "बढ़का दाई" (छत्तीसगढ़ी भाषा में)	डॉ० गीता शर्मा	17
7. प्रवासी भारतीयों का हिंदी साहित्य में योगदान	सदफ इश्त्याक	18
8. किन्नर विमर्श : किन्नर कल आज और कल	डॉ० लक्ष्मी तिवारी	19
9. भारतीय साहित्य में ग्रामीण परिवेश : "होरी भारतीय किसान का वास्तविक चित्र"	डॉ० असावेणी मुरली	20
10. हिन्दी साहित्य में महिलाओं की भागीदारी	डॉ० अमित शुक्ला	21
11. मीडिया की भूमिका	केशी गुप्ता	22
12. वेदों में नारी के यज्ञ–अधिकार	देवेन्द्र कौर बैंस	23
13. गढ़वाली भाषा साहित्य की रचना खण्डकाव्य – छुलुक माछी दुलुक आँसू	डॉ० शोभा रतूड़ी	24
14. हिन्दी नाटकों में ग्रामीण परिवेश और नारी–जीवन	डॉ० एस० प्रीतिलता	25
15. भाषा और राजनीति	पम्मी सिंह 'तृप्ति'	26
16. हिन्दी साहित्य और नारी संवेदना	उमेश कुमार	27
17. भारतीय साहित्य में ग्रामीण परिवेश	डॉ० विनोद श्रीराम जाधव	28
18. जनभाषा के रूप में हिन्दी का वर्चस्व	डॉ० हरप्रीत कौर	29
19. जनसंचार माध्यम (मीडिया, सोशल मीडिया सहित), भाषा, व्यवहार, उत्तरदायित्व और नैतिकता	दीपक दीक्षित	30
20. हिंदी का दलित आत्मकथा साहित्य तथा 'छोरा कोल्हाटी' का'	वंदना एस०	31
21. महिलाओं की साहित्य में भागीदारी	मधुरानी	32
22. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य	डॉ० दुर्गेश नंदिनी	33
23. किन्नर विमर्श	श्रीमती मार्ग्रेट कुजूर	34
24. भारतीय साहित्य में ग्रामीण परिवेश	शिखा सक्सेना	35
25. किन्नर विमर्श	डॉ० अमृता चतुर्वेदी	36
26. जनसंचार माध्यम (मीडिया, सोशल मीडिया सहित) भाषा और उत्तरदायित्व	डॉ० पूजा रानी	37
27. विश्व में हिन्दी काम महत्व	प्रो० मंजुला राणा	38
28. जब पर्दा उठा !	एम०के० भट्ट 'निर्धन'	39
29. किन्नर विमर्श	बुद्धिनी कुमारी	40
30. हिंदी और मलयालम की सहायक क्रियायें – प्रकृति और प्रकार	डॉ० रंजित एम०	41
31. अनुवाद कला : सी०वी० बालकृष्णन के "अनार अब भी भूलते हैं" की दृष्टि में	डॉ० सूर्या बोस	42
32. "औपन्यासिक तत्वों के आधार पर डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यासों की समालोचना"	कपिल देव पंवार	43
33. किन्नर – सामाजिक व सांस्कृतिक पक्ष	डॉ० संध्या जैन	44
34. भारतीय साहित्य में ग्रामीण परिवेश	डॉ० किरण शर्मा	45
35. हिन्दी उपन्यास में ग्रामीण परिवेश	सरफराज अहमद	46

हिंदी और मलयालम की सहायक क्रियायें – प्रकृति और प्रकार

डॉ० सी० बालसुब्रमण्यम केरल राज्य के पालक्काड के रहने वाले हैं। कालीकट विश्वविद्यालय से एम०ए० और पीएच०डी० की उपाधि प्राप्त करने के बाद अब सरकारी विक्टोरिया कालेज में सहायक आचार्य के रूप में काम कर रहे हैं। केरल राज्य के शीर्षस्थ भाषा वैज्ञानिक डॉ० सी० बालसुब्रमण्यम जी तुलनात्मक भाषा विज्ञान, आधुनिक हिंदी साहित्य आदि विषयों पर रूचि रखते है। आपकी एक प्रमुख रचना है "हिंदी और मलयालम की सहायक क्रियायें–प्रकृति और प्रकार"।

पंडित कामता प्रसाद गुरु ने 'हिंदी व्याकरण' नामक रचना में भाषा के बारे में बताया है, "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली–भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों का विचार स्पष्टतया समझ सकते है।" अर्थात, मनुष्य के चिंतन एवं संप्रेषण का सबसे प्रमुख साधन है, भाष। जिसका वैज्ञानिक अध्ययन भाषा विज्ञान कहलाता है। ध्वनि से लेकर अर्थ तक के इकाइयों के सिद्धांतों को निरूपित कर, अन्य विज्ञान का निर्माण करता है। व्याकरण और भाषा विज्ञान का गहरा संबंध है। व्याकरण एक कला है और भाषा विज्ञान एक विज्ञान। भाषा विज्ञान, भाषा का वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

भाषा विज्ञान भाषा और वाणी विषयक कौतूहलता को शांत करते है। दूसरे शब्दों में वह भाषा की आत्मकथा है। भाषा विज्ञान के अध्ययन की तीन दिशाएँ माना जाता है–वर्णनात्मक, तुलनात्मक और ऐतिहासिक। वर्णनात्मक भाषा विज्ञान में भाषा के विशिष्ट काल का संगठनात्मक अध्ययन किया जाता है। ऐतिहासिक भाषा विज्ञान में भाषा के काल क्रमिक विकास का अध्ययन किया जता है। भाषा विज्ञान की सहायता से हम किसी भाषा का विवेचन, विश्लेषण और अनुशीलन करते हैं। उसी दृष्टि से दूसरी भाषा का विवेचन करने पर तुलनात्मक भाषा विज्ञान का अविर्भाव होता है। कुछ आचार्यों के मत में बिना तुलना के अध्ययन वैज्ञानिक नही होता। वे तुलनात्मक भाषा विज्ञान को ही भाषा विज्ञान मानते है। डॉ० सी० बालसुब्रमण्यम की रचना तुलनात्मक भाषा विज्ञान पर आधारित है।

भारत में प्राचीन काल में ही स्वरों के उच्चारण, शब्द की उत्पत्ति आदि पर आचार्यों का ध्यान पड़ा था। भारतीय भाषाओं का विकास होते रहने का कारण भी यह ही है। हिंदी और मलयालम आकृति और पारिवारिक दृष्टि से अलग–अलग भाषाएँ हैं। मलयालम द्रविड़ परिवार की दक्षिणी शाखा की एक प्रमुख भाषा है और हिंदी भारोपीय परिवार की भाषाओं में एक है। मलयालम और हिंदी भाषाएँ संस्कृत भाषा से प्रभावित है। दोनों भाषाओं के बीच कर्ता–कर्म–क्रिया क्रम, सहायक क्रिया संरचनायें आदि संरचनात्मक साम्यता देख सकते है।

एक भाषा क्षेत्र के रूप में समझे जाने वाले भारत में, एक भाषा दूसरी भाषा से प्रभावित होना तो आम बात है। सहायक क्रिया वह क्रिया है जो वाक्य में मुख्य क्रिया के साथ क्रिया या स्थिति को दर्शाने में प्रयुक्त होती है। भाषाओं में सहायक क्रियाओं का विकास आधुनिकता का लक्षण है। भाषा को और अधिक अभिव्यक्तिपूर्ण बनाने के लिए उसमें निहित अवयवों का नव निर्माण करते रहेंगे। सहायक क्रिया इस प्रकार के नव–निर्माणों में एक है। इस तथ्य के आलोक में लेखक ने हिंदी और मलयालम भाषा के सहायक क्रियाओं का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

"हिंदी और मलयालम की सहायक क्रियायें–प्रकृति और प्रकार" में कुल छः अध्याय है। प्रथम अध्याय में भारत भाषा क्षेत्र के सन्दर्भ में मलयालम और हिंदी भाषाओं का सामान्य अध्ययन प्रस्तुत किया है। द्वितीय और तृतीय अध्यायों में हिंदी और मलयालम की सहायक क्रियाओं से संबंधित बातों का विवेचन किया गया है। मुख्य क्रियाएँ और सहायक क्रियाएँ नामक चतुर्थ अध्याय में हिंदी और मलयालम के क्रिया और सहायक क्रियाओं का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। पंचम अध्याय में हिंदी और मलयालम की सहायक क्रियाओं का अर्थपरक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अंतिम अध्याय में हिंदी और मलयालम की सहायक क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

सहायक क्रियाओं की परंपरा, नामकरण, पहचान, वर्गीकरण आदि के आधार पर दोनों भाषाओं के सन्दर्भ में अध्ययन करने के बाद व्याकरणिक प्रकार्यों की समानता, अभिव्यक्त अर्थ की समानता, वक्ता की अभिवृति व्यक्त करने में समानता जैसे मानदंडों के आधार पर दोनों भाषाओं की सहायक क्रियाओं की तुलना की गयी है।

हिंदी और मलयालम भाषा के सहायक क्रियाओं की उत्पत्ति से लेकर दोनों भाषाओं में सहायक क्रियाओं के प्रयोग तक के बारे में इस रचना में बताया गया है। विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से लेखक समझा रहे हैं, दोनों भाषाओं में सहायक क्रियायें वक्ता केन्द्रित हैं। वक्ता की मनोवृत्तियों का उद्घाटन करना उनका मुख्य प्रयोजन है। दोनों भाषाओं की सहायक क्रियाओं का संकलन करने के उपरान्त उनका वर्गीकरण भी आपने किया है। इसके बाद पूर्ववर्ती आचार्यों के अध्ययन से तुलना करके यह साबित किया गया है कि हिंदी में अट्ठाईस और मलयालम में तैंतीस सहायक क्रियाएँ हैं।

हिंदी और मलयालम भाषाओं में मूल अर्थ की दृष्टि से समानता रखने वाली दस वर्ग की सहायक क्रियाओं के बारे में भी लेखक ने बताया है। दोनों भाषाओं में सहायक क्रियाओं की पहचान उसी भाषा के व्याकरणिक एवं संरचनात्मक नियमों के भीतर रह कर ही संभव है। भाषा वही जीवित रहती है, जो जनता के द्वारा प्रयुक्त होती है। वह न तो विद्वानों द्वारा गढ़ी–मढ़ी जाती है, न कोशों द्वारा सिखाई जाती है। वह गतिशील तथा वृद्धिशील प्रकृति की है, जिसका विस्तार होता रहता है। अनुवाद के जरिये भाषाओं के बीच की दूरी कम करने का कोशिश तो आम बात है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से हुए यह कोशिश सराहनीय ही है।

डॉ० रंजित एम०
केरल

RNI : DELHIN/2017/75205 वर्ष–3 अंक–9 ISSN : 2582-1679

भाषा सहोदरी

भाषा सहोदरी हिंदी